ISSN: 2249-7862 (Print): 2455-877X (Online)
www.aureoleonline.in

# "ट्रांसजेंडर का जीवन संघर्ष: 'पन्ना बा' और 'इज्जत क□रहवर' कहानियों क□संदर्भ में"

**Nadia C. Raj***
Assistant Professor,
Department of Hindi,
Sree Narayana Arts and Science College,
Kumarakom
*Email- nadiacraj@gmail.com

## शोध-सार

'पन्ना बा' और 'इज्जत के रहवर' दोनों कहानियों में संघर्ष भरित ट्रांसजेंडरों की मुकम्मल तस्वीर पाठकों के सामने उभरती है। इन कहानियों के माध्यम से उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं का □ ध्ययन करके उनके साहस, संघर्ष और उत्साह की प्रशंसा करते हुए उन्हें समाज में न्याय और समानता दिलाने की कोशिश की जाती है। कहानी में रेखांकित तनावपूर्ण घटनाएँ, ट्रांसजेंडरों के साथ होने वाले □ न्याय का चित्र, उनकी साहसिकता, आत्मसमर्पण का भाव आदि का विश्लेषण करने पर यही ज्ञात होता है कि उनको समाज में □ पनी □ स्मिता और □ धिकारों की रक्षा करने के लिए संघर्षपूर्ण जीवन बिताना पड़ता है।

## मूल-शोध

संघर्ष करने की चेतना मनुष्य की एक मनोवृत्ति है जो मानव विकास को गति देता है। मनुष्य □ पने प्रतिकूल परिवेश से संघर्ष करके ही तरक्की करता आ रहा है। मनुष्य चाहे परिवार में हो, कार्यस्थल में हो या समाज में उसकी सोच और काम उसके □ नुभव, जीवन की चुनौतियों और संघर्षों के प्रति संवेदनशील होने की क्षमता, उसके परिवेश आदि से प्रभावित रहता है। संघर्ष चेतना मनुष्य को उसके सामाजिक प्रतिरोध से □ वगत कराते हैं। उसके □ नुसार वह □ पनी क्षमताओं को मजबूत बनाने, आत्मविश्वास बनाए रखने, जीवन में कामयाब होने का निर्णय लेता है। संघर्ष चेतना मनुष्य को विकास के पद पर ले जाता है इसलिए मनुष्य इस पर सोच विचार भी करता रहता है। डॉ हरदयाल के शब्दों में कहें तो "संघर्ष मनुष्य के जीवन का ऐसा □ निवार्य सत्य है कि इसे कोई भी □ स्वीकार नहीं कर सकता है। □ पनी □ स्तित्व रक्षा के लिये, □ पने □ स्मिता की खोज करने के लिए, □ पने जीवन को सुखी बनाने के लिए मनुष्य को संघर्ष करना ही पड़ता है।"1 □ र्थात्: सामाजिक संघर्ष मनुष्य को □ पनी □ स्मिता को बनाए रखने में निर्णायक भूमिका निभाता है।

समकालीन भारतीय समाज में कई वर्गों और समुदायों को □ पनी □ स्मिता को कायम रखने के लिए घोर संघर्ष करना पड़ा है। उनमें महिलाएँ, दलित तथा आदिवासी लोग ट्रांसजेंडर आदि शामिल हैं। ट्रांसजेंडर हमारे समाज का सबसे कमज़ोर पक्ष माना जाता है और इनकी यौनिक पहचान स्त्री या पुरुष के रूप में नहीं होती। ये लोग किन्नर, हिजड़ा, तृतीय लिंगी, ट्रांसजेन्डर, थर्ड जेंडर आदि नामों से जाने जाते हैं। हाल ही में वे मंगलामुखी नाम से भी जाने जाते हैं। लेकिन इनका जीवन □ त्यंत यातना पूर्ण रहता है, यहाँ तक कि उनका परिवार भी उनका साथ नहीं देता है। इन्हें शिक्षा, रोजगार, राजनीति आदि से दूर रखा जाता है। डॉ आर पी वर्मा का कहना है- "किन्नरों

की स्थिति अत्यंत दयनीय है। समाज में किन्नरों को अत्यंत नकारात्मक एवं हय दृष्टि से देखा जाता है। लोग उन्हें देखकर इनसे घृणा करते हैं। जन सामान्य वर्ग इनसे सामाजिक संपर्क रखना पसंद नहीं करता है।"2 भारतीय समाज में उनकी सामाजिक स्थिति को समझने के लिए उनकी समस्याओं का निरंतर अवलोकन करना और उनसे संबंधित सभी क्रियाकलापों का अध्ययन करना सामाजिक प्रतिबद्धता होगी। उदाहरण के लिए ट्रांसजेंडर की सामाजिक स्थिति को समझने में साहित्य का योगदान महत्वपूर्ण है। वर्तमान हिंदी में अनेक उपन्यासों, कहानियों, कविताओं तथा अन्य कई साहित्यिक विधाओं के माध्यम से साहित्यकार ट्रांसजेंडर के जीवन के प्रत्येक पहलू को उजागर करते हैं, यही नहीं उनके प्रति समाज को जागरूक करते हैं और सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा देते हैं। कई सामाजिक रचनाएँ हैं जो थर्ड जेंडर लोगों के जीवन के शब्द चित्र के रूप में हमारे सामने आते हैं और उनकी समसमायिक स्थिति को समझने में मददगार होते हैं।

डॉ एम फिरोज खान की राय में "समाज में जीते जी उन लोगों को बहुत सी यातनाएँ सहनी पड़ती है। भारतीय समाज एवं साहित्य किन्नर समाज के बारे में केवल जानकारी देती हैं बल्कि उनके उत्थान की दिशा में महत्वपूर्ण विमर्श भी सुझाती है।"3 इस संबंध में एक और कथन प्रस्तुत है- "हिंदी के वर्तमान साहित्य में हम देखते हैं जो विविध आयामों का चयन हुआ है जैसे कि स्त्री विमर्श, आदिवासी विमर्श जैसे कई सारे पहलुओं को लेकर लेखकों ने लेखन कार्य किया है। इसमें सभी समाज में अपनी अस्मिता की लड़ाई लड़ते हैं और संघर्ष करते हैं। वैसा ही एक आयाम है किन्नर विमर्श। वो भी अपनी अस्मिता एवं अधिकार की लड़ाई के लिए संघर्ष कर रहे हैं।"4 यानि कि साहित्य के द्वारा ट्रांसजेंडर के संघर्ष, उनकी चेतना, उनकी पहचान आदि का व्याख्यान मिलता है। हिंदी साहित्य की कहानी विधा के द्वारा किन्नर के जीवन के विविध पहलू, उनके संघर्ष और उनकी अनुभूतियों को अभिव्यक्ति दिया जा रहा है। कहानी के माध्यम से ट्रांसजेंडर समूह के व्यक्तियों को समानता और मान्यता दिलाने के साथ-साथ उन्हें आत्म सम्मान और समाज में स्वीकृति दिलाने का प्रशंसनीय कार्य हो रहा है। पिछले दस-पंद्रह सालों से हिन्दी साहित्य में विपुल मात्रा में ट्रांसजेंडर से संबन्धित अनेक कहानियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। उनमें से कुछ प्रमुख कहानियाँ हैं-

राही मासूम रज़ा कृत 'खलीक अहमद बुआ', सलाम बिन रज़ाक कृत 'बीच के लोग', एस. आर. हरनोट कृत 'किन्नर', कुसुम अंसल कृत 'ई मुर्दन का गाँव', किरण सिंह कृत 'संझा', कादंबरी मेहरा कृत 'हिजडा', गरिमा संजय दुबे कृत 'पन्ना बा', अंजना वर्मा कृत 'कौन तार से बीनी चदरिया', महेंद्र भीष्म कृत 'रतिदेवन की चाची', लवलेश दत्त की 'नाच', श्रीकृष्ण सैनी कृत 'हिजड़ा', विजेंद्र प्रताप सिंह कृत 'संकल्प', चाँद दीपिका कृत 'खुश रहो क्लिनिक', पूनम पाठक कृत 'किन्नर' और पारस दासोत कृत 'गलती जो माफ नहीं' और डॉ. मुक्ति शर्मा कृत 'श्रापित किन्नर'।

शोध अध्ययन हेतु गरिमा संजय दुबे कृत 'पन्ना बा' और डॉ पद्मा शर्मा कृत 'इज्जत के रहवर' चुनी गयी है। 'पन्ना बा' कहानी में गरिमा संजय दुबे ने ट्रांसजेंडर की सामाजिक स्थिति पर विचार करते हुए उनके कठिन तथा संघर्षपूर्ण जीवन पर प्रकाश डाला है। पन्ना बा एक हिजड़ा है जो समाज में अपनी अस्मिता पाने के लिए, अपनी संवेदनाओं को समझने के लिए समाज से प्रतिरोध जताती है। पन्ना बा को समाज में स्वीकृति नहीं मिलती, क्योंकि उसकी आवाज, व्यवहार तथा वेशभूषा इस सामाजिक परिवेश के अनुकूल नहीं है। गरिमा संजय दुबे के शब्दों में –"पान से रंग

होंट और किनारों से निकलती पिक, मेहँदी से रंगे कहीं सफ़ेद, कहीं काले, कहीं लाल बाल बेतरबीत और कभी सँवारे हुए। हर त्योहार, शिशु जन्म पर अपनी टोली के साथ नगर भर में घूमती/घूमता पैसे इकट्ठे कर अपने दो खोली के घर में चला जाता।"5 उन्हें हमेशा समाज के दूसरे लोगों की हीन दृष्टि ताने और निंदनीय भावनाओं से जूझना पड़ता है।

ट्रांसजें□र लोगों के जीवन की सभी जटिलताओं और चुनौतियों का विवरण पन्ना बा के पात्र द्वारा लेखिका ने दिया है। "कैसा जीवन प्रभु, कितनी यातना, अपने ही शरीर से घिन की हद तक बेगानापन। कैसे किसी इंसान का मन स्वीकार है मरदाना आवास, लेकिन कपड़े और श्रृंगार करने का मन औरतों की तरह, दाढ़ी मूंछों का उगना पुरुष की तरह और शरीर का विकास स्त्री की तरह। कोई काम पर रखे नहीं, कोई माता-पिता इस अभिशाप को साथ रखने को राजी नहीं, कोई नौकरी नहीं, कोई पढ़ाई नहीं, बेचारा मनुष्य जिए भी तो कैसे? कैसे देश से परे हो, फिर भी जीता है एक किन्नर, देह का भान है भी और नहीं भी हो तो भी क्या? सारे लाज शर्म सब त्याग, कितने साहस के साथ निकलता है शगुन, गाने, पैसा मांगने, अश्लील हरकतों, व्यंगबाण, द्विअर्थी मुस्कानों और दुत्कारों को सहन करता हुआ भी अपनी जिजीविषा को जिंदा रखे हुए।"6 पन्ना बा का संघर्ष, कड़ी मेहनत, संवेदनशीलता और साहस का परिणाम है। वे समाज में अपने असली रूप को स्वीकार करते हैं और अपनी कला को आगे बढ़ाने के लिए प्रयासरत हैं। उनका उत्साह, साहस और प्रेरणा संघर्षों के सामने सफलता की एक उज्ज्वल मिसाल प्रस्तुत करते हैं।

पदमा शर्मा की कहानी 'इज्जत के रहवर' में ट्रांसजें□र समाज के लोगों के जीवन के विभिन्न पहलुओं को रेखांकित करती है। समाज में उनकी स्थिति और द्वंद्व का वर्णन लेखिका द्वारा विस्तार से किया गया है। प्रस्तुत कहानी में सोफिया नामक एक ट्रांसजें□र है जो हिज□ों के समूह की मुखिया है। अपने समाज में अन्याय के विरुद्ध □टकर खड़े होने वाली सोफिया ही इस कहानी में प्रमुख भूमिका निभाती है। कहानी के आरंभ में सोफिया और उनके साथी श्रीलाल के घर उनके छोटे भाई विश्वंभर के विवाह के दिन नेग मांगते हुए दिखाई देते हैं। वे तालियाँ पीटते हुए स्त्री पुरुष के मिले-जुले विलक्षण आवास के साथ आ रही थी। पड़ोस के लोग भी तालियों की चट-चटाहट सुनकर अपने-अपने घर के बाहर निकल आए। हिजड़ो के एक समूह को देखते ही सबके चेहरे पर मुस्कान आ गई। यह देखकर सोफिया पहले से भी ऊंची आवाज में तालियाँ पीटती है, मानो समाज के प्रति उनका सारा गुस्सा और प्रतिरोध बाहर प्रकट कर रही हो। □ॉ. पदमा शर्मा बताती है – "अधिक तेज आवाज में तालियाँ पीटती हुई बोली..... हाय.... हाय..... हाय..... हाय.... अच्छे खाते-पीते हो..... तुम लोग। इतना नहीं दोगे तो गरीब बेचारा क्या देगा..... हाय.... हाय..... हाय.....हमारा पेट कैसे पलेगा। कहते हुए उसने पेट पर पड़े साड़ी के पल्ले को झटके से हटाकर अपना पेट दिखा दिया जिससे पेट के साथ-साथ बदन का ऊपरी हिस्सा भी दिख गया।"7 मुहल्ले वालों ने उन ट्रांसजें□रों के जीवन संघर्ष के प्रति ध्यान ही नहीं दिया जिन्हें अपनी रोजी रोटी कमाने के लिए कड़ा संघर्ष उठाना पड़ रहा है।

ट्रांसजें□र लोगों की स्थिति यह है कि समाज में सब उनकी हंसी उड़ाते हैं, उनको हीन दृष्टि से देखते हैं। समाज में कोई उनके अस्तित्व को नहीं मानता है। परिवार वाले भी अक्सर उनका साथ नहीं देते। अच्छी तालीम भी न मिलने के कारण ये लोग निरक्षर ही रहते हैं। कोई इन्हें नौकरी भी नहीं देते, तो ये लोग कैसे जियेँ। अपनी आजीविका कैसे ढूंढ निकाले? दूसरों से अपनी आवश्यक चीज़ें जबरदस्ती हटपने के सिवा उनके सामने और कोई चारा नहीं रह जाता। "किन्नर

समाज का मुख्य व्यवसाय शादी, बच्चे के जन्म के समय, या कोई भी शुभ प्रसंग में नेग माँगना होता है। वर्तमान समाय में बढ़ रही महंगाई के कारण शहरों में लोगों ने उन्हें बुलाना और नेग देना बंद कर दिया है, इसलिए अब हमें वे रस्तों पर, ट्रेन में, बस में सड़क पर या बाग में जबर्दस्ती पैसे माँगने केलिए मजबूर देखे जाते हैं।"**8** सोफिया अपने समाज के सदस्यों से लड़कर आगे बढ़ने वाली है। गांव वालों के अपराधों का सामना करने का साहस भी वह दिखाती है। अपने मन का उत्साह और ऊर्जा वह अपने साथियों में भी फूँक देती है।

इस प्रकार सोफिया दूसरों में भी अपने अंदर की जोश भर देती है। हालांकि उसे अपने

समाज से विरोध और उपेक्षा का भाव ही दृष्टिगोचर होता है। सोफिया अपने समाज के प्रति वह प्रतिबद्धता दिखाती है जो उस समाज के प्रतिष्ठित व्यक्ति भी नहीं दिखाते। जब भी उसके सामने कोई संकट आ जाता है, वह चाहे वैयक्तिक हो या सामाजिक, सोफिया उसके समाधान के लिए कोई ना कोई तरीका ढूँढ लेती है या फिर उसके लिए अकेले क्या कर सकती है वह करती है। कहानी के सन्दर्भ में –"उस दिन सड़क पर खून से लथपथ व्यक्ति को जब कोई नहीं उठा रहा था उसे सोफिया ही अस्पताल पहुंचाई थी। □ॉक्टर से उसने कहा था कि खून की जरूरत हो तो हमारा ले लो लेकिन □र यही है कि कहीं उसे कोई बीमारी ना हो जाये। हम जैसा श्राप न लग जाये बेचारे को।" **9** उसका सामाजिक संघर्ष केवल जीवित रहने के लिए ही नहीं बल्कि समाज के प्रति

अपना दायित्व निभाने में भी दृष्टिगोचर होता है। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी जहाँ दूसरे लोग चुपचाप खड़े रहते हैं सोफिया खतरे में पड़े लोगों की मदद करने से भी नहीं हिचकिचाती।

व्यक्तिगत रूप से देखें तो भी सोफिया उसूलों वाली है। चाहे वह खुद आर्थिक संकट में क्यों ना हो दूसरों की मदद करने में वह कभी पीछे नहीं हटती। अपने उसूलों के अनुसार ही वह दूसरों से पैसा ह□पती है। नेग लेने के संदर्भ में श्रीलाल और सोफिया के बीच वाद-प्रतिवाद होता है। श्रीलाल का कहना है कि जब तक मामू पां□ुरंगा जीवित रहते थे तब तक उनके यहाँ शगुन लेने कोई नहीं आता था। इसलिए उनका कहना है कि सोफिया पां□ुरंगा की वारिस होने के नाते श्रीलाल के यहाँ से शगुन लेना मामू के धर्म के विरुद्ध होगा। इसके बदले सोफिया कहती है कि "तुमने रिश्ता माना होता तो हम भी निभाती। रिश्ता तुमने तोड़ दिया। ....हाय-हाय-हाय... शादी के न्योता देने के समय हम कोई नहीं थी। हमें भी का□ देते तो मानते।"**10** याने कि जब श्रीलाल ने रिश्ता तोड़ा तब सोफिया क्यों उसे निभाये। वह भी जब ज़रूरत पड़ने पर खुद श्रीलाल ने ही उस रिश्ता को याद किया था। इस तरह संघर्ष भरे जीवन से गुजरते हुए भी सोफिया अपने जीवन में न्याय और अन्याय का विवेचन करने में समर्थ है। यही नहीं खुद आर्थिक संकट में पड़कर भी सुनामी के लहर में बर्बाद लोगों को सरकार की तरफ से आर्थिक सहायता करने हेतु कलेक्टर को सबसे पहले पाँच हज़ार का चेक सोफिया ने ही दिया था।

होली, दिवाली, राखी, शादी आदि के अवसर पर सोफिया अपने साथियों को लेकर सब घरों में शगुन लेने चल पड़ती है। प्रत्येक माहौल के अनुसार शगुन का रेट भी अलग-अलग रखा गया है। घरों से शगुन लेना वह अपनी नौकरी मानती है। लोगों को अपनी नाच दिखाती है फिर पटाती है और उनसे खूब पैसे वसूल करती है। टीवी देख कर यह कोशिश भी करती है कि वह हीरोइन जैसे नाच सके। याने वह अपने हुनर में सुधार लाने का प्रयास भी करती रहती है।

'इज्जत के रहवर' कहानी का एक अन्य पात्र है बल्लू। उसके माध्यम से डॉ. पदम शर्मा ने ट्रांसजेंडरों के बीच की संघर्ष पूर्ण जीवन शैली को पाठकों के सामने प्रकट किया है। प्रत्येक संदर्भों तथा परिस्थितियों में अनाथ बच्चों की आंतरिक मानसिकता की सच्चाई को प्रस्तुत किया है और समाज में उनकी यथार्थ अवस्था का भी चित्र उकेरा है।

बल्लू चौदह साल का एक लड़का है जो उन ट्रांसजेंडरों के बीच पला बढा है। उस मोहल्ले में एक पगली द्वारा जन्मा बच्चा है बल्लू। पगली के बच्चे होने पर मोहल्ले वाले चिंतित रह गए कि इसे पगली कैसे पालेगी। लेकिन उनमें से किसी ने भी उस बच्चे का पालन पोषण करने का साहस नहीं दिखाया तब पांडुरंग के टीम ने ही बच्चे की जिम्मेदारी ली। यह जानकर श्रीलाल के मन में उस समय ट्रांसजेंडरों के प्रति आभार और श्रद्धा उमड़ आई थी। बल्लू उन कड़वी सच्चाइयों को सामने लाता है जिनका सामना एक अनाथ बालक को तब करना पड़ता है जब उसे ट्रांसजेंडरों के बीच रहना पड़ता है। बल्लू तो इन ट्रांसजेंडर लोगों की हरकतों से आदि हो गया था। फिर भी जब ट्रांसजेंडरों का व्यवहार हद से बाहर हो गया तब सोफिया ने ही बल्लू को वहाँ से बचाती है। अनाथ बल्लू को ट्रांसजेंडरों की बदसलूकी से बचाने के लिए सोफिया को अपने समाज से भी प्रतिरोध करना पड़ा।

श्रीलाल की बेटी प्रतिभा की इज्जत उसी के मोहल्ले के दादा छिंगा ने लूटी। लेकिन श्रीलाल प्रतिभा ने उसके प्रति पुलिस में रिपोर्ट नहीं लिखवाई। उन्होंने इस डर से रिपोर्ट नहीं दर्ज किया कि अगर पूरे शहर को पता चल गया तो उसकी बेटी से कौन शादी करेगा। बल्लू और सोफिया द्वारा गवाही देने का बार बार करने पर भी श्रीलाल रिपोर्ट लिखवाने के लिए तैयार नहीं हुआ। तब सोफिया उलाहना देने वाले स्वर में बोलती हैं- "तुम लोग औरतों को आगे बढाने की बातें तो बड़ी-बड़ी करते हो। लेकिन जब कुछ करने की बारी आती है तो पीछे हट जाते हो। सच्ची बात यह है कि आज भी तुम्हारी मानसिकता नहीं बदली है।" **11** यह सुनकर भी श्री लाल टस से मस न हुआ तो वह वहां से चली गई। लेकिन सोफिया ने उसे गुंडे दादा छिंगा को एक सबक सिखाती है। उन्होंने उस लड़के का गुप्तांग काट दिया लेकिन खेद की बात यह है कि मोहल्ले के लोगों का शक है कि सोफिया ने बिरादरी में अपनी संख्या बढ़ाने के लिए ही उसके अंग-भंग कर दिये हैं।

सोफिया ने बिना ताली की फड़फड़ाहट और बिना हा-हा के स्वर से जवाब दी "हाँ यही सच है कि ये काम हमने किया है। लेकिन अपनी संख्या बढ़ाने के लिए नहीं बल्कि तुम जैसे भीरु लोगों में चेतना जगाने के लिए। जिस दिन बलात्कारियों को यह सजा मिलने लग जाएगी उस दिन से कोई भी गुंडा औरत की इज्जत लूटने की हिम्मत नही कर सक सकेगा।" **12** इस प्रकार संघर्ष भरी जीवन में भी ट्रांसजेंडरों द्वारा हरामियों को ऐसी सज़ा दी जाती है कि बाद में कोई बहू बेटियों की तरफ आँख उठाने की भी हिम्मत न करें। जितनी संवेदना थर्ड जेंडर लोगों में है उतनी संवेदना श्रीलाल जैसे प्रतिष्ठा प्राप्त व्यक्ति में नहीं है।

'इज्जत के रहवर' कहानी के माध्यम से लेखिका पदम शर्मा ने ट्रांसजेंडर समाज के व्यक्तियों के आर्थिक और सामाजिक संघर्ष को रेखांकित करके उनकी सामाजिक स्थिति का विचार-विश्लेषण किया है।

## निष्कर्ष

'पन्ना बा' और 'इज्जत के रहवर' दोनों कहानियों में ट्रांसजेंडर लोगों के जीवन संघर्ष को □त्यंत मार्मिक एवं प्रभावी तरीके से प्रस्तुत किया है। ये कहानियाँ उनके जीवन के वैयक्तिक, सामाजिक और आर्थिक संघर्षों का हृदयस्पर्शी चित्र पाठकों के सामने प्रस्तुत करता है। सामाजिक और सांस्कृतिक □ समानता के कारण उन्हें समाज में स्वीकृति नहीं मिलती है। इसके कारण उनका आत्मविश्वास घट जाता है और उन्हें निरंतर सामाजिक तथा मानसिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। सामाजिक □ सुरक्षा के कारण भी उनके जीवन में संघर्ष ज़ारी है। 'पन्ना बा' तथा 'इज्जत के रहवर' जैसी कहानियाँ ट्रांसजेंडरों के जीवन संघर्षों को प्रकट करते हुए उन्हें यह प्रेरणा भी देती है कि वह □पने आत्म समर्पण और साहस के माध्यम से जीवन के हर संघर्ष का सामना कर सके। सामाजिक भेदभाव और □स्वीकृति, कानूनी संघर्ष, रोजगार की कमी, सामाजिक □सुरक्षा, सामाजिक तथा मानसिक तनाव आदि के कारण इन लोगों के सामाजिक जीवन तनाव बना रहता है और वे सदैव संघर्ष की स्थिति में होते हैं। उन्हें शिक्षा, रोजगार सामाजिक सुरक्षा एवं स्वीकृति तथा आर्थिक सहायता की ज़रूरत होती है।

## मुख्य शब्द

ट्रां जेंडर, संघर्ष चेतना, सामाजिक स्थिति, संवेदनशीलता, सामाजिक प्रतिबद्धता, आंतरिक मानसिकता

## संदर्भ ग्रंथ-सूची

1. संघर्ष: परिवर्तन और साहित्य (1980), डॉ. हरदयाल देवेन्द्र इससर (सं), भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, पृ.सं. 58
2. साहित्य में किन्नर विमर्श की आवश्यकता (2019), डॉ. आर. पी. वर्मा, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साईंटिफ़िक □ँड इन्नोवतिवे रिसर्च स्टडीस, ISSN 2347
3. थर्ड जेंडर और साहित्य (2018), डॉ. एम. फ़िरोज खान (सं), साक्षी ऑफसेट, कानपुर पृ.सं. 130
4. किन्नर साहित्य : व्यथा, यातना और संघर्ष (2019), डॉ. देवयानी महिडा (सं.), साक्षी ऑफसेट, कानपुर, पृ.सं. 132
5. पन्ना बा, गरिमा संजय दुबे https://m-hindi.webduniya.com/hindi-stories/panna-ba-story
6. पन्ना बा, गरिमा संजय दुबे https://m-hindi.webduniya.com/hindi-stories/panna-ba-story
7. इज्जत के रहबर, पद्मा शर्मा, https://hindikahani.hindi-kavita.com
8. किन्नर साहित्य : व्यथा, यातना और संघर्ष (2019), डॉ. देवयानी महिडा (सं.), साक्षी ऑफसेट, कानपुर, पृ.सं. 132
9. इज्जत के रहवर पद्मा शर्मा https://hindikahani.hindi-kavita.com
10. इज्जत के रहवर पद्मा शर्मा https://hindikahani.hindi-kavita.com
11. इज्जत के रहवर पद्मा शर्मा https://hindikahani.hindi-kavita.com
12. इज्जत के रहवर पद्मा शर्मा https://hindikahani.hindi-kavita.com